संदेश पांच

यीशु में सत्य है के रूप में मसीह को सीखने के द्वारा अपनी परम्परा के बजाय एक नया मनुष्य को जीना

शास्त्र अध्ययन: इफि. 4:20-21; मत्ती 11:28-30; युह. 5:19, 30; 7:18; 10:30

I. हमारे जीने का स्तर हमारी परम्परा के अनुसार नहीं होना चाहिए बल्कि यीशु में सत्य के अनुसार होना चाहिए, प्रभु यीशु के द्वारा जीया गया सत्य जब वह पृथ्वी पर था-इफि. 4:20-21:

A. जिस प्रकार से प्रभु यीशु पृथ्वी पर जीये, उसी प्रकार आज नया मनुष्य को जीना चाहिए-मत्ती 11:28-30; युहन्ना 6:57; 4:34; 5:17, 19, 30; 6:38; 17:4

B. यीशु में सत्य है यीशु के जीवन की असली स्थिति को दर्शाता है जो चार सुसमाचारों में दर्ज है; यीशु ने एक जीवन जीया जिसमें उसने सबकुछ परमेश्वर में, परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के लिए किया; परमेश्वर उसके जीने में था और वह परमेश्वर के साथ एक था।

C. यीशु इस प्रकार से जीया जो हमेशा परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता के अनुरूप था, यीशु के जीवन में सत्य की धार्मिकता और पवित्रता हमेशा प्रदर्शित होती थी-आ. 24:

1. यीशु का मानव जीवन सत्य के अनुसार था, जोकि स्वयं परमेश्वर के अनुसार धार्मिकता और पवित्रता से भरा है।

2. यह इस सत्य-महिमांवित और अभिव्यक्त परमेश्वर-की धार्मिकता और पवित्रता में था-कि नया मनुष्य रचा गया।

D. हमें मसीह को सीखने की जरूरत है और उसमें सत्य के जीवन को सीखना है; मसीह को सीखना बस मसीह की बनावट में ढलना है, जोकि मसीह के स्वरूप के अनुरूप होना है-आ. 20-21; रोम. 8:28-29; 2 युहन्ना 1; युहन्ना 4:23-24

E. सामुहिक व्यक्ति के रूप में, नया मनुष्य को यीशु में सत्य है के समान सत्य का जीवन-परमेश्वर को अभिव्यक्त करता जीवन जीना चाहिए।

F. यदि हम अपने मन की आत्मा के अनुसार जीते हैं, तो हमारे पास सामुहिक नया मनुष्य का दैनिक जीवन होगा-एक जीना जो यीशु में सत्य से मेल खाता है-इफि. 4:23

II. एक नया मनुष्य का जीना बिल्कुल यीशु के जीने के समान होना चाहिए; क्योंकि एक सामुहिक परमेश्वर-मनुष्य के रूप में एक नया मनुष्य के लिए, हमें एक परमेश्वर-मनुष्य के जीवन को जीने की जरूरत है-फिलि. 1:19-21; 3:10; इफि. 4:20-21; 1 युह. 4:17:

A. मसीह का मानव जीवन परमेश्वर के गुणों को मनुष्य के सद्गुणों में अभिव्यक्त करने के लिए मनुष्य का परमेश्वर को जीना था, उसका मानवीय गुण दिव्य गुणों से भरा, मिश्रित और संतृप्त था-लूका. 1:26-35; 7:11-17; 10:25-37; 19:1-10:

1. जब प्रभु यीशु पृथ्वी पर थे, हालांकि वह मनुष्य थे, वे परमेश्वर के द्वारा जीते थे-युहन्ना 6:57; 5:19, 30; 6:38; 8:28; 7:16-17

2. प्रभु यीशु ने परमेश्वर को जीया और सबकुछ में परमेश्वर को अभिव्यक्त किया; जो कुछ उसने किया वह उसके अंदर से और उसके द्वारा परमेश्वर का करना था-14:10

3. मरकुस का सुसमाचार प्रकट करता है कि जीवन जो प्रभु यीशु ने जीया वह पूरी तरह से परमेश्वर के नये नियम के गृह प्रबंध के लिए और के अनुसार था।

B. प्रथम परमेश्वर-मनुष्य के फैलाव, वृद्धि, पुनरुत्पादन और निरंतरता के रूप में, हमें उसी प्रकार का जीवन जीना चाहिए जो उसने जीया-1 युहन्ना 2:6:

1. प्रभु का परमेश्वर-मनुष्य को जीना ने हमारे परमेश्वर-मनुष्य को जीने के लिए एक आदर्श खड़ा किया-जीने के लिए क्रूस पर चढ़ाया जाना कि परमेश्वर मानवता में प्रकट हो-गला. 2:20

2. हमें अपने आप का इंकार करना है, मसीह की मृत्यु के अनुरूप होना है और उसकी आत्मा के बहुतायत से उसे बढ़ाना है-मत्ती 16:24; फिलि. 3:10; 1:19-21

3. हमें आत्म बढ़ावा का इंकार करना चाहिए और स्वभाविक मनुष्य के उन्नति की निंदा करनी चाहिए; हमें एहसास करना चाहिए कि मसीही गुण मूलत: दिव्य जीवन, दिव्य स्वभाव और स्वयं परमेश्वर से जुड़ा है-गला. 5:22-23

4. एक जिसने परमेश्वर-मनुष्य के जीवन का जीया वह अब हम में और हमारे द्वारा जीता आत्मा है; हमें इसे छोड़ किसी और चीज़ को हमें भरने और कब्ज़ा करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए-2 कुरि. 3:17; 13:5; इफि. 3:16-19

5. हमें (प्रार्थना के वातावरण और आत्मा में) ग्रहण करने के लिए अपने आप को प्रभु के समक्ष खोलने की जरूरत है, लूका 6:36 में उसका हमें आदेश देना: ''जैसा तुम्हारा पिता दयालु है वैसे ही तुम भी दयालु बनो''; हमें हर सुबह प्रभु को दुयालु व्यक्ति के रूप में सम्पर्क करने की जरूरत है-विला. 3:22-23; रोम. 9:15 और निर्ग. 34:6; भजन. 103:8; लूका 1:78-79; 10:25-37; रोम. 12:1

III. पाँच हज़ार लोगों को पाँच रोटियां और दो मछलियां का चमत्कार करते समय, प्रभु ने अपने चेलों को उससे सीखना सिखाया-मत्ती 14:14-21; 11:28-30:

A. मत्ती 14:19 कहता है कि उसने पाँच रोटियों और दो मछलियों को लिया और स्वर्ग की ओर देख कर आशीष माँगी:

1. स्वर्ग की ओर देखकर सूचित करता है कि वह अपने स्रोत को, स्वर्ग में अपने पिता को देख रहा था:

   a. यह सूचित करता है कि उसने एहसास किया कि आशीष का स्रोत वह नहीं था; भेजने वाले के रूप में पिता को, नाकि भेजे जाने वाले व्यक्ति को आशीष का स्रोत होना चाहिए-रोम. 11:36

   b. इस बात की परवाह न करते हुए कि हम क्या कर सकते हैं या हम कितना जानते है क्या करना है, हमें एहसास करना चाहिए कि हमारे करने पर हमें भेजने वाले की आशीष देने की जरूरत है ताकि खुद पर भरोसा न कर, उसपर भरोसा कर हम आपूर्ति के मार्ग बने-मत्ती 14:19; गिन. 6:22-27

2. उसका स्वर्ग की ओर परमेश्वर को देखना सूचित करता है कि स्वर्ग में पिता द्वारा पृथ्वी पर भेजे गये पुत्र के रूप में, वह पिता के साथ एक था, पिता पर भरोसा रखता था-युहन्ना 10:30

   a. जो हम जानते हैं और जो हम कर सकते हैं कुछ मायने नहीं रखता; हमारी सेवकाई में प्रभु के साथ एक होना और उसमें भरोसा रखना ही मायने रखता है-1 कुरि. 2:3-4

   b. आशीष केवल तब आता है जब हम प्रभु के साथ एक होते हैं और उसपर भरोसा रखते हैं-2 कुरि. 1:8-9

3. प्रभु ने खुद से कुछ नहीं किया-युहन्ना 5:19; मत्ती. 16:24:

   a. हमें अपने आप का इंकार करना चाहिए और खुद से कुछ करने का इरादा नहीं रखना चाहिए बल्कि सबकुछ उस के द्वारा करने का इरादा रखना चाहिए।

   b. हमें स्वयं का इंकार करने और यीशु मसीह की बहुतायत की आत्मा द्वारा दूसरे जीवन से जीने के लिए निरंतर अपनी आत्मा का अभ्यास करना चाहिए-फिलि. 1:19-21

4. प्रभु ने अपनी इच्छा नहीं चाही बल्कि उसकी इच्छा चाही जिसने उसे भेजा था–युहन्ना 5:30; 6:38; मत्ती 26:39, 42:

   a. उसने अपनी योजना, अपने इरादे और अपने उद्देश्य का इंकार किया।

   b. हम सब को एक बात के लिए सर्तक होना चाहिए–जब हम कुछ काम के लिए भेजे जाते हैं, हमें उस मौके को अपना लक्ष्य करने के लिए नहीं लेना चाहिए; हमें केवल उसके लक्ष्य, योजना, उद्देश्य और इरादा को करने के लिए जाना चाहिए–2 तिमु. 5:2

5. प्रभु ने अपनी महिमा नहीं चाही बल्कि पिता की महिमा जिसने उसे भेजा था–युहन्ना 7:18; 5:41; 12:43:

   a. महत्वाकांक्षी होना आपकी अपनी महिमा खोजना है–3 युहन्ना 9

   b. हमें देखने की जरूरत है कि हमारा स्वयं, हमारा उद्देश्य, और हमारी महत्वकांक्षा हमारे काम को नष्ट करते तीन बड़े कीड़ें हैं; हमें उनसे घृणा करना सीखना है।

B. यदि हम उसकी पुन: प्राप्ति में प्रभु द्वारा हमेशा इस्तेमाल होना चाहते हैं, तो हमें एक नये मनुष्य की खातिर अपने स्वयं का इंकार करना, अपने उद्देश्य को इंकार करना और अपनी महत्वाकांक्षा को छोड़ना होगा–मत्ती 16:24

© 2020 Living Stream Ministry